Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

मुगल हरम में स्त्रियों की स्थिति, हरम का प्रशासन व हरम के अन्दर की जीवनशैली

Sunil Kumar*

Lecturer in History, GSSS Fatehpur, Billoch, Ballabhgarh, Haryana

सार – ***अकबर ने अपने साम्राज्य को शक्तिशाली बनाने के लिए कई राजपूत घरानों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए। 1562 में अकबर ने जोधाभाई से शादी की जो राजा भारमल की पुत्री थी।[1] जोधाभाई का हरम में मुख्य स्थान था। उसी के गर्भ से सलीम का जन्म हुआ। जो अकबर के बाद 1506 में बादशाह बना। जोधाभाई से शादी के बाद अकबर ने भारमल को उच्च मनसब प्रदान किया, जो 5000 का था। जोधाभाई के भाई भगवान दास को अमीर उद दौला की उपाधि अकबर द्वारा दी गई और उसके भतीजे मानसिं को 7000 का दिया गया था। ये सब जोधाभाई के कारण ही हुआ था। इसके अलावा जौधपुर, जैसलमेर आदि राजवाड़ों की राजकुमारियों के साथ अकबर ने शादी की। ये सभी महिलाएँ हरम में अपने पुराने धार्मिक विश्वासों को चलाती रही उन्हें मुस्लिम बनने के लिए बाध्य नहीं किया गया।[2] इस प्रकार साफ है कि अकबर के समय राजनीति में हरम का प्रभाव था।***

----------X----------

अकबर के अन्तिम समय में शाही महिलाओं ने सलीम को विद्रोह से बचाने में मुख्य भूमिका अदा की। अकबर औरतों की दरबार में दखलअन्दाजी पसन्द नहीं करता था। एक बार अकबर की माँ हमीदा बानो बेगम, पत्नी रूकाया सुल्तान बेगम, एक सुन्नी मुसलमान को नहीं बचा पाई थी जिसने धार्मिक द्वेष में लाहौर के एक सिया मुसलमान की हत्या कर दी थी। लेकिन सलीम के कहने पर अपने बेटे की गलतियों को माफ किया।[3]

*16*वीं सदी के अन्त में राजकुमार सलीम अत्यधिक पियक्कड़ बन गया था, जिसके कारण उसकी बादशाह से दूरी बन गई। *1599* ई. में जब अकबर दक्कन छोड़ने की तैयारी कर रहा था, तो हमीदा के कहने पर उसने सलीम को बादशाह का 'कुरनीश' बना दिया।[4] लेकिन इसके बाद भी सलीम अपनी हरकतों से बाल नहीं आया। वह अकबर के लम्बे शासन से तंग आ गया था और *1601* ई. में उसने अपने पिता के खिलाफ विद्रोह कर दिया, और इलाहाबाद में शाही उपाधी धारण कर ली। जब शान्तिवार्ता से काम न चला तो अकबर ने उससे शक्ति से निपटने का निर्णय लिया।

सलीम हरम की महिलाओं का चहेता था। वे अकबर को सलीम के खिलाफ कठोर निर्णय लेने से रोकती रही। हमीदा बानो बेगम, गुलबदन बेगम, जोधा भाई, सलीमा सुल्तान बेगम आदि ने बादशाह से सलीम को माफ करने की गुहार लगाई। सलीमा सुल्तान बेगम ने अकबर को याद दिलाया कि वह किस तरह पुत्र प्राप्ति के लिए प्रार्थना करता था। इसके बाद अकबर कुछ नरम पड़ज़ और उसने सलीमा से कहा कि वह इलाहाबाद जाकर सलीम को मनाकर आगरा ले आए। सलीमा सुल्तान सलीम को आगरा लाने में सफल हुई। सलीम अकबर से किसी विशेष अवसर पर मिलना चाहता था। लेकिन अकबर उससे तुरन्त मिलना चाहता था। अकबर बड़े प्यार से अपने बेटे से मिला और उससे कोई सवाल नहीं किया। बिना कुछ कही सुनी के सलीम वापिस अपने परिवार में घुल मिल गया। *1603* ई. में सलीम ने अपने पिता को *1000* सोने की मोहरें तथा *354* हाथी भेंट किए। बादशाह ने अपनी पगड़ी अपने बेटे के सिर पर रख दी।[5]

मई *1603* तक सब कुछ ठीक ठाक हो गया और अब अकबर ने मेवाड़ के महाराणा प्रताप के बेटे राणा अमर सिंह के खिलाफ सैन्य अभियान के लिए सलीम को भेजने का निर्णय लिया, क्योंकि राण अमर सिंह की शक्ति बढ़ती जा रही थी। लेकिन सलीम को अपने पिता पर शक हो गया और उसने बहानेबाजी करके जाने से इन्कार कर दिया। एक बार फिर हरम की महिलाओं ने सलीम का पक्ष लिया और बादशाह से अपील की कि सलीम को दरबार में ही रखा जाए। सलीम इलाहाबाद वापिस जाना चाहता था

www.ignited.in

और कुछ विचार विमर्श के बाद अकबर ने भी जाने की अनुमति दे दी। ज्योंही वह वहाँ पहुंचा उसने एक बार फिर अपनी पुरानी करतूतें शुरू कर दी और राज्य में आतंक फैला दिया।

अकबर इस पर बड़ा दुखी हुआ, अकबर साम्राज्य के लिए अपने बेटे और अपने बेटे को साम्राज्य के लिए बचाना चाहता था। शान्तिवार्ता असफल हुई तब अकबर बड़ी फौज लेकर आगरा से निकला, लेकिन रास्ते में उसे अपनी माँ हमीदा बानो बेगम के अचानक गम्भीर रूप से बिमार होने की खबर मिली। शुरू में अकबर को विश्वास नहीं हुआ और उसने सोचा कि यह सोची समझी चाल हो सकती है क्योंकि हमीदा सलीम से बहुत प्यार करती थी। अकबर ने राजकुमान खुर्रम और हमीम अी को पता करने के लिए आगरा भेजा। खुर्रम वापिस आया और हमीदा की बिमारी के बारे में बादशाह को बताया। अकबर तुरन्त उल्टे पैर समय से आगरा पहुंचा। हमीदा *29* अगस्त *1604* को चल बसी।[6]

सलीम को उसकी दादी की मौत के बारे सूचित कर दिया गया, वह आगरा आया और अकबर ने उसको उसके उपहार समेत स्वीकार कर लिया लेकिन वह सलीम को सबक सिखाना चाहता था। सलीम को नारी गृह में बन्दी बना लिया गया। शराब और अफीम बन्द कर दी गई। लेकिन हरम की शाही महिलाओं की गुहार पर दस दिन के बाद उसे छोड़ दिया गया और सलीम वापिस अपने महल में आ गया। इसके साथ ही सलीम के विद्रोह का अन्त हो गया। इसके साथ ही सलीम का अकबर को सत्ता से हटाने का उद्देश्य सफल ना हो सका। हर मौके पर सलीम को शाही हरम की महिलाओं ने बादशाह के कहर से बचाया।[7]

1556 ई. में हुमायूं की मृत्यु के बाद *14* वर्ष की आयु में अकबर बैरमखां के सरंक्षण में गद्दी पर बैठा। बैरमखां की महानता उसकी स्वामी शक्ति में निहित है। भारत में मुगल सत्ता की पुनः स्थापना में उसके सहयोग को भुलाया नहीं जा सकता। वह हर संकट की घड़ी में हुमायूं के साथ रहा। हुमायूं के भाग्य को बदलने में बैरमखां ने अपना सक्रिय सहयोग दिया। हेमू को परजित करना बैरम खां का एक बड़ा कार्य था। बैरम खां का प्रभाव लगातार बढ़ रहा था जिससे हरम दल के सदस्य घृणा करते थे।

हरम दल अकबर को बैरम खां के खिलाफ करने के लिए हर समय अवसर की तलाश में रहते थे। माहम अन्गा जो आरम्भ से ही राजनीतिक शक्ति की इच्छुक व शक्तिशाली महिला थी, का प्रभाव अकबर पर लगातार बढ़ रहा था। वह बैरम खां से नफरत करती थी। हरम दल ने बैरमखां को राजकार्यों से दूर करने की योजना बनाई। अकबर को उसकी माता के बीमार होने के बहाने से आगरा से दिल्ली बुलाया गया और इन सब लोगों ने मिलकर सम्राट को प्रेरित किया कि बैरमखां से सब राज्य-शक्तियां अपने हाथ ले और बैरमखां को राजनीतिक कार्यों से अलग कर दे। हरम दल की साजिश के अनुसार अकबर ने अब्दुल लतीफ द्वारा बैरमखां को दिल्ली से ही सन्देश भेज दिया कि उसने राज्य की बागडोर अपने हाथों में लेने का निश्चय कर लिया है और बैरम खां को हज करने के लिए मक्का चले जाना चाहिए। बैरखां ने सम्राट के आदेश को स्वीकार किया। वह अपने पद को छोड़ कर पंजाब की ओर चला गया। इस समय अकबर ने बैरमखां को भारत से शीघ्रता से निकालने के लिए 'पीर मुहम्मद' को उसके पीछे भेजा। बैरम खां ने इसमें अपना अपमान समझा, क्योंकि पीर मुहम्मद पहले उसके अधीन कार्य करता था। अतः उसने विद्रोह कर दिया। जालन्धर के समीप उसे हरा दिया गया। सम्राट ने उसकी सेवाओं को देखते हुए उसे क्षमा कर दिया और मक्का जाने का आदेश दिया परन्तु गुजरात के पटन नामक स्थान पर मुबारक खां नामक अफगान ने उसका कत्ल कर दिया। इस प्रकार बैरम खां का दुखद अन्त हुआ।[8]

अब हरम दल स्वतन्त्र रूप से प्रशासनिक कार्यों में प्रभावी हो गया, जिसका नेतृत्व माहम अन्गा कर रही थी। वास्तव में सत्ता की बागडोर माहम अन्गा के हाथ में ही आ गई थी। वह एक चतुर और अकबर के प्रति वफादार महिला थी। माहम अन्गा ने अपने बेटे आदमखां को प्रधानमन्त्री बनाने की हर सम्भव कोशिश की लेकिन अकबर ने मुनीम खां को प्रधानमन्त्री नियुक्त कर दिया, जो पहले हरम दल का ही सदस्य था। मुनीम खां माहम अन्गा की बढ़ती हुई ताकत से अवगत था, उसने प्रशासन में हरम की महिलाओं के बढ़ते हुए हस्तक्षेप के बारे में कई बार बादशाह को अवगत भी करवाया, लेकिन अकबर ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।[9]

इसी समय अकबर का ध्यान मालवा की तरफ गया जिस पर बजाबादुर शासन कर रहा था जो एक भोग विलासी शासक था। वह अपना अधिकतर समय रंग रलियों में बिताता था। अकबर ने *1561* में आदमखां को मालवा भेजा।[10] बाजबादुर हा के बाद सारंगपुर छोड़कर भाग गया। उसकी सारी सम्पत्ति छीन ली गई, जिसमें उसकी हरम की सभी महिलाएं भी शामिल थी। रूपमति जिसके

www.ignited.in

चरचे दूर-दूर तक फैले हुए थे उसको भी पकड़ लिया गया। आदमखां के सैनिकों ने इन महिलाओं पर खूब अत्याचार किए। हरम की बहुत सी महिलाओं ने आत्महत्या कर ली। रूपमति भी बुरी तरह घायल हो गई। वह मरना चाहती थी लेकिन आदमखां ने उसे बचा लिया और उससे झूठा वादा किया कि यदि वह अपने आपको सही रखेगी तो उसे बाजबादुर के पास वापिस भेज दिया जाएगा। इस दौरान आदमखां ने लूट की सारी सम्पत्ति बादशाह को न भेज कर धोखे से अपने पास ही रख जी। अकबर ने इस बारे में माहम अन्गा को चेतावनी और स्वयं सारंगपुर जाकर आदमखां को बन्दी बना लिया। अगले दिन माहम अन्गा भी सारंगपुर पहुंची और आदमखां को सारी सम्पत्ति बादशाह को सौंपने की सलाह दी। मामला सुलझने के बाद बादशाह वापिस राजधानी आ गया ज्योंहि अकबर वापिस गया, आदमखां ने रूपमति समेत सभी महिलाओं को अपने कब्जे में ले लिया। जब यह समाचार बादशाह के पास पहुंचा तो तुरन्त अकबर ने सभी महिलाओं को वापिस लौटाने का आदेश दिया इस समय माहम अन्गा ने उन्हें वापिस लौटाने की बजाए सभी का वध कर दिया ताकि ये सब बादशाह को कुछ बता न सकें।[11]

अकबर आदमखां से बहुत नाराज हुआ लेकिन माहम अन्गा को सीधे-सीधे कुछ नहीं कहा। माहम अन्गा से अब अकबर का विश्वास उठ चुका था। अब अकबर हरम दल से छुटकारा पाने का प्रयत्न करने लगा। अकबर ने आदमखां को वापिस बुलाकर पीर मुहम्मद को मालवा का गर्वनर बना दिया, मनिमखां को प्रधानमन्त्री के पद से हटा कर जीजी अन्गा के पति समशुद्दीन अहमद गजनवी को प्रधानमन्त्री नियुक्त किया।[12] समशुद्दीन की नियुक्ति हरम को रास न आयी। आदमखां जो अपने आपको समकालीन राजनीति में बहुत प्रभावशाली समझता था, समशुद्दीन नियुक्ति पर बहुत नाराज हुआ और अकबर से बहुत चिढ़ गया। निजामुद्दीन अहमद लिखता है कि आदम खां ने यौवन के अंकार तथा हरम दल के बहकावे में आकर प्रधानमन्त्री समशुद्दीन को एक दिन उसके कार्यालय में ही कत्ल कर दिया।[13] इसके बाद वह शाही महल की तरफ बढ़ा जहां बादशाह सो रहा था। वस्तुतः वह बादशाह के पास बुरी नीयत से नहीं गया था, वरन् क्षमा याचना के उद्देश्य से गया था, किन्तु एक पहरेदार के द्वारा उसे आगे बढ़ने से रोग दिया गया। शोरगुल से अकबर जाग गया और आधमखां के समक्ष चला आया। जब अकबर को प्रधानमन्त्री के कत्ल का समाचार मिला तो बादशाह ने आदमखां से पूछताछ की तो आदमखां ने न सिर्फ बहानेबाजी की वरन् बादशाह के साथ अभद्र व्यवहार भी किया। अकबर ने क्रोधित होकर आदम खां को महल से नीचे फैंकवा दिया जिसमें आधमखां की मृत्यु हो गई बाकी हरम दल के सदस्य सजा के डर से भाग खड़े हुए। जब माहम अन्गा को आधमखां की मृत्यु का समाचार मिला तो वह भी पुत्र की मृत्यु का शौक सहन ना कर सकी और *40* दिन बीमार रहने के बाद उसकी भी मृत्यु हो गई। बादशाह ने खुद माहम अन्गा को कन्धा दिया तथा आदमखां की कब्र पर सुन्दर मकबरा बनवाया।[14] हरम दल के अन्य सदस्यों को माफ कर दिय। मुनीमखां को दोबारा प्रधानमन्त्री नियुक्त किया। इस तरह 'पर्दा शासन' का अन्त हुआ। सही अर्थों में *1562* ई. में अकबर हिन्दुस्तान का बादशाह बना।

बकतुनिसा बेगम (अकबर की सौतेली बहन)

अकबर के समय हरम से राजनीति को प्रभावित करने वाली शाही महिलाओं में से बकतुनिसा प्रमुख थी। वह हुमायूं और माच्चुन बेगम की पुत्री थी उसका जन्म *1550* में हुआ था।[15] उसका भाई मिर्जा मुहमद हाकित काबुल का गवर्नर था। जिसने *1581* में विद्रोह किया और पंजाब में लाहौन तक आ पहुंचा। जहां पर मानसिंह ने उसे रोका। अकबर खुद काबुल गया परन्तु मिर्जा हाकिम पहाड़ियों की तरफ भाग गया। अकबर ने उसकी जगह बकतुनिशा बेगम को काबुल का गर्वनर बनाया तथा मिर्जा हाकिम को बकतुनिसा के कहने पर अकबर ने उसे माफ कर दिया। इसके बाद मिर्जा हाकिम बकतुनिसा बेगम के नाम काबुल का शासन करने लगा। इस प्रकार बकतुनिसा बेगम ने अपने प्रभाव से काबुल समस्या का हल किया।[16]

सन्दर्भ सूची

अबुल फजल: आईने-अकबरी, अंग्रेजी अनुवाद,जैरट, खण्ड *2-3,* दिल्ली, *1989*

जहांगीर, नूरूद्दीनः तुजक-ए-जहांगीरी, अंग्रेजी अनु. ए. रोजर्स एवं एच. बेवरेज, भाग-*2,* लंदन, *1909-1914*

जेमिली करेरीः ए वायेज राउण्ड दा वल्ड, एस.एन. सेन (सम्पा.) इण्डियन ट्रैवल्स ऑफ़ थेवनॉट एण्ड करेरी, नई दिल्ली, *1949*

टेरी, एडवर्डः ए वायेज टू ईस्ट इण्डिया, अनु. विलियम फास्टर, आक्सफोर्ड, *1921.*

www.ignited.in

ग्रन्थ सूची

1. अबुल फजल, अकबरनामा, (अनु.), भाग-II, पूर्वोक्त, पृ. 242-243
2. एस.ए. तरमिजी, एडिक्टस फरोम दा मुगल हरम, पूर्वोक्त, पृ. XI
3. एस.ए. तरमिजी, एडिक्टस फरोम दा मुगल हरम, पूर्वोक्त, पृ. XI सोमा मुखर्जी, रॉयल मुगल लेडिज एण्ड देयर कोन्ट्रिब्यूसन, पूर्वोक्त, पृ. 130
4. अबुल फजल, अकबरनाम (अनु.), पूर्वोक्त, पृ. 140
5. सोमा मुखर्जी, रॉयल मुगल लेडिज एण्ड देयर कोन्ट्रिब्यूसन, पूर्वोक्त, पृ. 130
6. सोमा मुखर्जी, रॉयल मुगल लेडिज एण्ड देयर कोन्ट्रिब्यूसन, पूर्वोक्त, पृ. 130
7. वही, पूर्वोक्त, पृ. 132
8. सोमा मुखर्जी, रॉयल मुगल लेडिज एण्ड देयर कोन्ट्रिब्यूसन, पूर्वोक्त, पृ. 122, 123
9. अबुल फजल, अकबरनामा, भाग-II, पूर्वोक्त, पृ. 204-205
10. वही, पृ. 205
11. सोमा मुखर्जी, रॉयल मुगल लेडिज एण्ड देयर कोन्ट्रिब्यूसन, पूर्वोक्त, पृ. 124
12. सोमा मुखर्जी, रॉयल मुगल लेडिज एण्ड देयर कोन्ट्रिब्यूसन, पूर्वोक्त, पृ. 125
13. एस.आर. शर्मा, मुस्लिम शासन का इतिहास, आगरा, 1937
14. सोमा मुखर्जी, रॉयल मुगल लेडिज एण्ड देयर कोन्ट्रिब्यूसन, पूर्वोक्त, पृ. 125
15. गुलबदन बेगम, हुमायूंनामा, (अनु.), पूर्वोक्त, पृ. 214
16. के.एस. लाल, दा मुगल हरम, पूर्वोक्त, पृ. 26

Corresponding Author

Sunil Kumar*

Lecturer in History, GSSS Fatehpur, Billoch, Ballabhgarh, Haryana